Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

कला एवं संस्कृति की भारतीय विरासत

Dr. ANILKUMAR KARSHANBHAI KHAVDU
ASSI. PROFESSOR HINDI
NAVJIVAN ARTS AND COMMERCE COLLEGE DAHOD

- Abstract:

भारत की कला एवं संस्कृति विश्व की प्राचीनतम, निरंतर और समृद्ध परंपराओं में गिनी जाती है। भारतीय सांस्कृतिक विरासत की विशेषता इसकी बहुलता, समन्वय और सहिष्णुता है, जिसमें विविध भाषाएँ, धर्म, दर्शन, जीवन-पद्धतियाँ और कलात्मक अभिव्यक्तियाँ समाहित हैं। यह शोधपत्र भारतीय कला एवं संस्कृति की ऐतिहासिक विकास-यात्रा का क्रमबद्ध अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य, नाट्य, लोककला और समकालीन सांस्कृतिक परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि भारतीय कला केवल सौंदर्य का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, आध्यात्मिक दृष्टि और मानवीय मूल्यों की संवाहक रही है।

कुंजी शब्द: भारतीय कला, संस्कृति, विरासत, स्थापत्य, मूर्तिकला, लोककला, शास्त्रीय परंपरा।

कला और संस्कृति किसी भी सभ्यता की पहचान तथा आत्मा होती है। किसी समाज की सोच, मूल्य, आस्थाएँ और जीवन-दृष्टि उसकी कला एवं संस्कृति में प्रतिबिंबित होती हैं। भारत की सांस्कृतिक विरासत विश्व में अपनी प्राचीनता, निरंतरता और विविधता के कारण अद्वितीय मानी जाती है। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर आधुनिक भारत तक कला के विभिन्न रूप निरंतर विकसित होते रहे हैं। भारतीय संस्कृति की मूल विशेषता यह रही है कि उसने बाहरी प्रभावों को आत्मसात करते हुए भी अपनी मौलिकता को सुरक्षित रखा है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार- "भारत की संस्कृति एक जीवंत और गतिशील परंपरा है, जो समय के साथ परिवर्तन स्वीकार करती हुई भी अपनी आत्मा को अक्षुण्ण रखती है।"[1]

कला भारतीय जीवन में केवल मनोरंजन का साधन नहीं रही, बल्कि धर्म, दर्शन, सामाजिक व्यवस्था और नैतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है।

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

- **संस्कृति की अवधारणा और भारतीय दृष्टिकोण:**

संस्कृति शब्द संस्कार से व्युत्पन्न है, जिसका आशय है—मानव जीवन को परिष्कृत और उन्नत करने वाली प्रक्रिया। संस्कृति में मानव के विचार, आचार, विश्वास, ज्ञान, कला, नैतिकता और सामाजिक व्यवहार सम्मिलित होते हैं। भारतीय संस्कृति का आधार धर्म है, किंतु यहाँ धर्म का अर्थ संकीर्ण धार्मिक आस्था न होकर कर्तव्य, नैतिकता और जीवन-मूल्यों से है । भारतीय संस्कृति की केन्द्रीय अवधारणा "वसुधैव कुटुम्बकम्" है, जो संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की उदार दृष्टि प्रस्तुत करती है ।

संस्कृति मानव जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियों की खोज और संरक्षण है । यह परिभाषा भारतीय संस्कृति पर पूर्णतः लागू होती है, क्योंकि यहाँ ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय दिखाई देता है ।

- **भारतीय कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:**

प्रागैतिहासिक और सिंधु घाटी काल- भारत में कला के प्राचीनतम प्रमाण भीमबेटका की गुफाओं में प्राप्त शैलचित्रों में मिलते हैं, जिनमें मानव और पशु जीवन के दृश्य अंकित हैं। ये चित्र उस समय के मानव की सौंदर्य चेतना और भावनात्मक अभिव्यक्ति को दर्शाते हैं । सिंधु घाटी सभ्यता की कांस्य नृत्यांगना, पशुपति की मुद्रा, मुहरों पर उत्कीर्ण पशु आकृतियाँ और सुव्यवस्थित नगर योजना उच्च कलात्मक और स्थापत्य बोध का प्रमाण हैं ।

वैदिक और मौर्य काल- वैदिक युग में कला का स्वरूप यज्ञीय प्रतीकों, मंत्रों और मौखिक परंपरा से जुड़ा रहा। मौर्य काल में कला को राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ । अशोक स्तंभ, सिंह शीर्ष और चमकदार पॉलिश वाली मूर्तियाँ इस काल की विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं ।

गुप्त काल : भारतीय कला का स्वर्ण युग- गुप्त काल को भारतीय कला का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल की मूर्तिकला में सौंदर्य, संतुलन, कोमलता और आध्यात्मिक भाव का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। सारनाथ और मथुरा की बुद्ध प्रतिमाएँ इसका श्रेष्ठ उदाहरण हैं । स्टेला क्रैमरिक के अनुसार- "गुप्त कला ने भारतीय सौंदर्यबोध को शास्त्रीय और आदर्श रूप प्रदान किया।"[2]

- **भारतीय स्थापत्य कला की परंपरा :**

भारतीय स्थापत्य कला धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति रही है । मंदिर, स्तूप, विहार, मस्जिद और किले स्थापत्य की विविध शैलियों को दर्शाते हैं ।

भारतीय मंदिर स्थापत्य की तीन प्रमुख शैलियाँ- नागर, द्रविड़ और वेसर- देश की भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता को प्रतिबिंबित करती हैं। कोणार्क का सूर्य मंदिर, खजुराहो के मंदिर, तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर स्थापत्य कला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं।

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

- **मूर्तिकला और चित्रकला**

भारतीय मूर्तिकला में देवताओं को मानवीय रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे ईश्वर और भक्त के बीच आत्मीय संबंध स्थापित होता है। बुद्ध, शिव, विष्णु और देवी की प्रतिमाएँ आध्यात्मिक भावनाओं की सजीव अभिव्यक्ति हैं । चित्रकला के क्षेत्र में अजंता की गुफाएँ, बाघ गुफाएँ, राजस्थानी और मुगल शैली विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये चित्र केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि सामाजिक और ऐतिहासिक दस्तावेज भी हैं । आनंद कुमारस्वामी लिखते हैं । "भारतीय कला का लक्ष्य बाह्य सौंदर्य नहीं, बल्कि आंतरिक सत्य की अनुभूति कराना है । "[3]

- **संगीत, नृत्य और नाट्य परंपरा:**

भारतीय शास्त्रीय संगीत राग और ताल पर आधारित है, जो भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करता है। हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत इसकी दो प्रमुख धाराएँ हैं । भरतमुनि का नाट्यशास्त्र भारतीय नृत्य और नाटक का आधार ग्रंथ है। भरतनाट्यम, कथक, कथकली, ओडिसी और मणिपुरी जैसे नृत्य शास्त्रसम्मत कला रूप हैं । भरतमुनि के अनुसार- "नाट्य लोक को शिक्षा, आनंद और नैतिक प्रेरणा प्रदान करता है ।"[4]

- **लोककला और जनसंस्कृति:**

लोककला भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यह जनसामान्य के जीवन, श्रम, उत्सव और संघर्ष की अभिव्यक्ति है। मधुबनी, वारली, पिथौरा, फड़ चित्रकला, लोकगीत और लोकनृत्य सामाजिक स्मृति को जीवित रखते हैं ।

- **समकालीन संदर्भ में भारतीय सांस्कृतिक विरासत:**

वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के बावजूद भारतीय कला और संस्कृति की प्रासंगिकता बनी हुई है। योग, आयुर्वेद, भारतीय संगीत और नृत्य को वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई है । जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में- जो समाज अपनी सांस्कृतिक विरासत को भूल जाता है, वह अपनी पहचान खो देता है ।

- **निष्कर्ष:**

भारतीय कला एवं संस्कृति की विरासत केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की दिशा तय करने वाली शक्ति है। यह विरासत मानवता को सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और आध्यात्मिक संतुलन का संदेश देती है । इसके संरक्षण और संवर्धन की जिम्मेदारी समाज और राज्य दोनों की है।

- **संदर्भ:**

1. राधाकृष्णन, एस. Indian Philosophy

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

2. स्टेला क्रैमरिक — Indian Art and Architecture
3. कुमारस्वामी, आनंद — The Dance of Shiva
4. भरतमुनि — नाट्यशास्त्र